है। अन्त में, देहान्त हो जाने पर यह जीवात्मा देहान्तर करता है, अन्य देह में प्रविष्ट होता है। इस प्रकार अगले जन्म में भी आत्मा को प्राकृत अथवा अप्राकृत, किसी न किसी देह की प्राप्ति अवश्य होगी, यह निश्चित है। इसलिए भीष्म-द्रोण की सम्भावित मृत्यु के लिए अर्जुन के शोक का कोई भी कारण नहीं। वे जीर्ण देह को त्याग कर नूतन देह को धारण करने से नवशक्ति युक्त हो जायेंगे, इस विचार से उसे तो प्रसन्न ही होना चाहिए। देहान्तर कर्मानुसार विविध सुख-दुःख भोगने का निमित्त सिद्ध होता है। महात्मा भीष्म तथा द्रोण को अगले जन्म में भगवद्धाम की प्राप्ति अथवा कम से कम स्वर्गादि श्रेष्ठ भौतिक सुख की उपलब्धि तो अवश्य ही होगी। इन में से किसी भी अवस्था के लिए शोक का कोई कारण नहीं हो सकता।

जीवात्मा, परमात्मा तथा परा-अपरा प्रकृति के स्वरूप को पूर्ण रूप से जानने वाला **धीर** कहलाता है। ऐसा पुरुष देहान्तर से व्याकुल नहीं होता। मायावादियों का एकात्मवाद मान्य नहीं है, क्योंकि आत्मतत्त्व को पृथक् अंशों में विभक्त नहीं किया जा सकता। यदि यह मान लिया जाय कि एक परमात्मा ही नाना जीवों के रूप में विभक्त हो गये हैं, तो वे परिवर्तनशील सिद्ध होते हैं, जो सर्वथा सिद्धान्तविरुद्ध है।

गीता का प्रमाण है कि जीव परतत्त्व के सनातन भिन्न-अंश हैं। अपरा प्रकृति (माया) में पतनशील होने से वे 'क्षर' कहलाते हैं। ये भिन्न-अंश नित्य भिन्न रहते हैं; मुक्ति हो जाने पर भी जीवात्मा परमात्मा से भिन्न-स्वरूप रहते हैं। किन्तु साथ ही, मुक्त होने पर श्रीभगवान् के सान्निध्य में वे सच्चिदानन्दमय जीवन का रसास्वादन करते हैं। प्रत्येक जीव-देह में जीवात्मा के अतिरिक्त परमात्मा के अस्तित्त्व को प्रतिबिम्ब के उदाहरण से समझा जा सकता है। जल में आकाश के प्रतिबिम्बित होने पर सूर्य, चन्द्रमा तथा नक्षत्रों की भी उसमें छाया पड़ती है। जीवात्मा तारों के समान हैं, जबकि परमेश्वर सूर्य अथवा चन्द्र के तुल्य हैं। अर्जुन भिन्न-अंश जीवात्मा का प्रतीक है और परमेश्वर हैं स्वयं श्रीकृष्ण। ये दोनों एक स्तर पर नहीं हैं जैसा चौथे अध्याय के प्रारम्भ में कहा गया है। यदि यह मान लिया जाय कि अर्जुन श्रीकृष्ण के समकक्ष है, अर्थात् श्रीकृष्ण अर्जुन से श्रेष्ठ नहीं हैं, तो गुरू-शिष्य के रूप में उनका सम्बन्ध निरर्थक हो जायगा। यदि दोनों माया-मोहित हैं तो एक के द्वारा दूसरे का गुरू बनकर उसे शिक्षा देना सर्वथा अप्रयोजनीय होगा, क्योंकि जो स्वयं मायाबद्ध है, उसका उपदेश प्रामाणिक नहीं हो सकता। अस्तु, वस्तुस्थिति से यह निर्णय होता है कि श्रीकृष्ण परमेश्वर हैं और माया-संमोहित स्मृतिलुप्त जीवात्मा अर्जुन से सदा अति श्रेष्ठ हैं।

मात्रास्पर्शास्तु कौन्तेय शीतोष्णसुखदुःखदाः।
आगमापायिनोऽनित्यास्तांस्तितिक्षस्व भारत।।१४।।

मात्रास्पर्शाः=इन्द्रियों और विषयों के संयोग; **तु**=तो; **कौन्तेय**=हे कुन्तीपुत्र; **शीत**=सर्दी; **उष्ण**=गर्मी; **सुख**=सुख; **दुखदाः**=दुःखदायक हैं; **आगम**=आना;